

नं० ५४ ट ट घ

चण्डी सप्तशतीकी

पत्राणि ३ स्तोत्रम्

संपूर्णम्

नं० ५४८८८ ध

चंडीसप्तश्लोकी

पत्राणि ३ (गीणि) (संपूर्णम्)

नं० १००७

नमः चंडिकायै ॥ ओं संकरी जंचक
 रीडोपिगीरचाटने ॥ नीलकंठनी
 लरक्तदैत्यभंसदोतनी ॥ चंडमुंड
 मुक्तदैत्यसरभीरचाटनी ॥ प्रचंड
 देडउग्रतेजचंडिकामहावली ॥

नं. १०००-क
 चण्डोरप-
 -श्लोकी
 उपनाम
 सिंग



चं
१

अग्रहस्तमथ्यभागसकललोक
मोहिनी॥ ज्ञानध्यानकर्मजोग
वेदविद्यावासिनी॥ मंत्रजंत्रज्यो
तिरूपतीनरूपयोजितः॥ प्रचं
ड॥ १॥ नैनवैनरंगरूपयष्टवेद

मालिनी॥ सुलोत्तपरेवाणकोट
 जगतज्योत्तपालिनी॥ असुरंतमे
 षलातत्तुर्विडवासिनी॥ प्रचंड॥ उ
 चंद्रवेन्दुसिसुरम्पमोहमृगलो
 चनी॥ केसरीकलोलसुषुषुषुहा

च
२

रसंहिते ॥ एवप्रसूतप्रशक्तिवाण
भेरसिंहनादिनी ॥ प्रचंड ॥ ५ ॥ अ
वज्रबुसंभुकोटवालब्रह्मचारेण
जंत्रजंत्रतीयमातृजीराणेभयंक
री ॥ उत्तभूतरक्तनिखप्रसूत ॥

धारणे॥ प्रचंड॥ ५॥ विद्धसिद्धनाद
विंददेवलोकधारणे॥ ब्रह्मइंद्रच
द्रवणीभोक्तमोक्तदायिनी॥ जंत्र
तोयमातरः मंगलामाहेश्वरी॥ प्र
चंड॥ ६॥ उरमडुर्मचोच्यकारकल्प

नं- १२२

चं
५
३

कोटसुंदरी॥जन्ममृतिहृयाल॥
लालसर्वडः।बनाशिनी॥निर्वाण॥
ज्ञानरिद्धसिद्धमहाबुद्धदायिनी प्र
चंडदंडउग्रतेजचंडिकामहाबली
७॥इति श्रीचंडीसप्तश्लोकीसंस्कृति॥